रेडियोधर्मी प्रदूषण से बच्चों को बचाओ

तोमोको किकुचि

जापान में गत 11 मार्च को फुकुशिमा में स्थित परमाणु संयंत्र क्षतिग्रस्त हो गया और अभी तक वहां से खतरनाक रेडियोधर्मी विकिरण रिस रहा है। आज भी जापान के पूर्वोत्तर इलाके में बहुत से लोग परमाणु संयंत्र से निकले रेडियोधर्मी प्रदूषण को झेल रहे हैं।

फुकुशिमा में चौदह साल तक के तीन लाख बच्चे रहते हैं। गत 5 अप्रैल को फुकुशिमा के स्कूलों और क्रेशों में फैले रेडिएशन के स्तर की जांच की गई। निष्कर्ष यह निकला कि 75.9 प्रतिशत स्कूलों में इतना ज़्यादा रेडिएशन था कि वह 'रेडिएशन नियंत्रित सीमा ज़ोन' के रेडिएशन के स्तर से भी अधिक था। 'रेडिएशन नियंत्रित सीमा ज़ोन' वह जगह है, जहां रेडिएशन का स्तर 0.6 से 2.2 माइक्रो सीवर्ट प्रति घंटा है और कानूनी तौर पर 18 वर्ष से कम उम्र के बच्चों को इस क्षेत्र में काम करना मना है।

परंतु विरोधाभास यह है कि गत 19 अप्रैल को जापान के शिक्षा मंत्रालय ने घोषित किया कि फुकुशिमा के जिस स्कूल में रेडिएशन का स्तर 3.8 माइक्रो सीवर्ट प्रति घंटा से कम हो, वहां बच्चे स्कूल की इमारत और मैदान का उपयोग सामान्य रूप से कर सकते हैं। स्थिति बहुत उलझी हुई है, क्योंकि एक तरफ यह कहा गया है कि जहां 0.6 माइक्रो सीवर्ट प्रति घंटा से ज़्यादा रेडिएशन हो, वहां बच्चों को नहीं जाना चाहिए। और दूसरी तरफ कहा गया है कि उससे छः गुना अधिक रेडिएशन से दूषित स्कूलों में बच्चे पढ़ सकते हैं और खेल सकते हैं। 3.8 माइक्रो सीवर्ट प्रति घंटा का रेडिएशन जर्मनी के परमाणु संयंत्र में काम करने वालों के लिए निर्धारित रेडिएशन का उच्चतम स्तर है। इतना ही नहीं, रेडियोधर्मी प्रदूषण का असर बड़ों की तुलना में बच्चों पर बहुत अधिक और गंभीर रूप में पड़ता है क्योंकि बच्चों का शरीर छोटा है और वह विकास की स्थिति में है। दरअसल, सरकार की यह घोषणा बच्चों के जीवन के साथ खिलवाड़ है।

जापान में स्कूल का नया सत्र 5 अप्रैल को शुरू हो चुका है। फुकुशिमा के तीन लाख बच्चों में से 75.9 प्रतिशत, अर्थात लगभग दो लाख बच्चे बुरी तरह रेडिएशन से दूषित स्कूल में पढ़ने-खेलने को मजबूर हैं। जब शिक्षा मंत्रालय की उपरोक्त घोषणा फुकुशिमा के सारे स्कूलों को आदेश के रूप में दी जाती है, तब नतीजा यह निकलता है कि प्रत्येक स्कूल को बच्चों से स्कूल आने के लिए कहना पड़ता है, माता-पिता को दूषित स्कूल में अपने बेटे-बेटी को भेजना पड़ता है और बच्चों को दूषित स्कूल में जाना पड़ता है। फुकुशिमा की एक माता की चीख है, "स्कूल ने मेरे बेटे को बताया कि 3.8 माइक्रो सीवर्ट प्रति घंटा के रेडिएशन से दूषित स्कूल के मैदान में वह खेल सकता है। मेरे बेटे की सरासर हत्या हो रही है। इस बर्बादी को कोई रोके।" मई में भी फुकुशिमा में रेडिएशन का स्तर लगभग उतना ही था जितना अप्रैल में था। ऐसी स्थिति में तुरंत स्कूल के रेडियोधर्मी प्रदूषण की सफाई करने की सख्त ज़रूरत है, परंतु आज तक ऐसी कोई कोशिश नहीं हुई है। फुकुशिमा ज़िले में एक शहर ने बिना सरकार की सहायता लिए स्कूल के मैदान से दूषित मिट्टी हटा दी। इस प्रकार की कोशिश से स्कूल के रेडिएशन का स्तर काफी कम हो जाता है। लेकिन इसके बारे में शिक्षा मंत्रालय का कहना है, "मिट्टी हटाने की कोई ज़रूरत नहीं," क्योंकि मंत्रालय की मान्यता के अनुसार वहां की मिट्टी के रेडिएशन का स्तर 3.8 माइक्रो सीवर्ट प्रति घंटा से कम है, अतः खतरनाक नहीं है। और उसका यह भी कहना है कि स्कूल के मैदान से मिट्टी हटाने के बाद उसे ले जाने के लिए जगह निश्चित नहीं हुई है। शिक्षा मंत्रालय का एकमात्र उद्देश्य यह है कि फुकुशिमा के जो स्कूल लंबे समय से बंद थे उन्हें जल्द ही खोला जाए। रेडिएशन का खतरा अपनी सीमा पार कर चुका है, लेकिन फिर भी मंत्रालय का कहना है कि स्कूल का वातावरण हानिरहित है।

ठीक उसी प्रकार जापान की इलेक्ट्रिक पॉवर कंपनियां हमें लंबे समय से बताती रहीं हैं कि परमाणु संयंत्र सर्वथा सुरक्षित हैं। हमें स्कूल में भी यही सिखाया गया था और टी.वी. के विज्ञापन में भी यही सुनने को मिलता था। परंतु आज जापानी जनता ने अच्छी तरह सीख लिया है कि वह सरासर झूठ था। इतना ही नहीं, जब परमाणु संयंत्र में भीषण दुर्घटना हुई, यह कहकर बच्चों की सेहत को खतरे में डाला जा रहा है कि जब तक दूषित मिट्टी रखने की जगह नहीं मिलेगी तब तक स्कूलों के रेडियोधर्मी प्रदूषण की सफाई नहीं की जाएगी। यह सरेआम जीवन के मूल्य की उपेक्षा हो रही है।

मेरे मन में प्रश्न आता है कि क्या जापान में परमाणु संयंत्र तभी बनाए गए थे, जब उपयोग किए जा चुके परमाणु ईंधन को जमा करके रखने के लिए जगह मिल चुकी थी? हम सब जानते हैं कि ऐसा नहीं हुआ था। आज तक देश में ऐसी कोई जगह नहीं है जहां उपयोग किए जा चुके परमाणु ईंधन को संभालकर रख सकें। अतः प्रत्येक परमाणु संयंत्र में ही उसका ढेर रखा हुआ है। फुकुशिमा के माता-पिता बस इतना ही चाहते हैं कि बच्चों के स्कूलों में रेडियोधर्मी प्रदूषण की सफाई की जाए। जब तक जगह निश्चित न हुई हो, तब तक कम से कम उस दूषित मिट्टी को एक जगह इकट्ठा रखा जाए, जिससे दूषित धूल फैलने की संभावना कम हो जाएगी।

शिक्षा मंत्रालय यह क्यों कहता है कि ऐसा करने की कोई ज़रूरत नहीं है? ऐसा कहकर वह न केवल मदद नहीं करता, बल्कि उस प्रकार की कोशिश में भी बाधा डालता है। फिर जो मिट्टी हटाई जाना है, वह कोई बहुत ऊंचे स्तर का रेडियोधर्मी तत्त्व नहीं है जैसा कि उपयोग किया जा चुका परमाणु ईंधन होता है। शिक्षा मंत्रालय भी खुद कहता है कि वह मिट्टी हानिरहित है और उसके ऊपर बच्चे निश्चित खेल सकते हैं। अगर वाकई ऐसा है, तो फुकुशिमा के सारे स्कूलों की मिट्टी शिक्षा मंत्रालय में ही रखी जानी चाहिए।

मुझे संदेह है कि शिक्षा मंत्रालय के लोग अपने बेटे-बेटी को फुकुशिमा के स्कूल में भेजेंगे। बच्चे के जीवन का महत्त्व समझना चाहिए। जब बच्चा मैदान में खेलता है तो वह मिट्टी उड़ेगी और उसके नाक और मुंह में दूषित धूल घुस जाएगी। बच्चे का शरीर रेडिएशन से बुरी तरह प्रभावित हो जाएगा। जब रेडिएशन शरीर के अंदर घुसता है तो उसे साफ नहीं किया जा सकता और शरीर में ही उसका संचय होता रहता है। मार्च में जिस समय परमाणु संयंत्र क्षतिग्रत हुआ था, तब आसपास के किसी व्यक्ति को भी यह पता नहीं था कि वहां से बहुत ज़्यादा रेडिएशन रिस रहा है। बहुत सारे माता-पिता अपने बेटे-बेटी का हाथ पकड़कर पानी या पेट्रोल लेने के लिए बहुत देर तक लाइनों में खड़े रहे थे। हम अंदाज़ा लगा सकते हैं कि रेडिएशन का कितना दुष्प्रभाव बच्चों पर पड़ा होगा।

तुरंत ही फुकुशिमा और संभावित इलाकों के सारे बच्चों के लिए रेडिएशन के असर की जांच की जानी चाहिए। यहां ध्यान देने की बात यह है कि फुकुशिमा ज़िले के अतिरिक्त कई अन्य क्षेत्रों में भी रेडिएशन का स्तर बहुत ऊंचा है, और हवा आदि के कारण परमाणु संयंत्र से काफी दूर होने के बावजूद रेडिएशन वहां बड़े पैमाने में पहुंचा है। शिक्षा मंत्रालय द्वारा फौरन ही ऐसे इलाकों के स्कूलों में रेडियोधर्मी प्रदूषण की सफाई की जानी चाहिए, ताकि जल्द से जल्द बच्चे सुरक्षित वातावरण में पढ़ना शुरू कर सकें।

टोक्यो इलेक्ट्रिक पावर कंपनी (टेपको) जापान के मीडिया के लिए बड़ा आर्थिक स्रोत है, इसलिए जापान के मुख्य टी.वी. चैनल, समाचार पत्र, पत्रिकाएं आदि इस प्रकार के महत्त्वपूर्ण मुद्दे को नज़रअंदाज़ कर रहे हैं। विदेशी मीडिया की सहायता से वास्तविकता का संचार विश्व भर में किया जाए। विश्व के और भारत के सहृदय लोगों की आवाज़ जापान तक पहुंचे, ताकि बच्चों की दुर्दशा को सुधारने के लिए तुरंत कदम उठाए जाएं। आज जापान के बच्चे संकट में हैं और उन्हें बचाने के लिए हर तरह के व्यावहारिक प्रयास शीघ्र ही शुरू होना चाहिए। ***(स्रोत फीचर्स)***